* मोहनजोदड़ो *

(सिंधु घाटी सभ्यता का प्रमुख नगर)

* 1. परिचय :

→ मोहनजोदड़ो सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे प्रसिद्ध और उन्नत नगर माना जाता है।

→ यह नगर अपनी अद्भुत नगर योजना, उत्कृष्ट जल निकासी प्रणाली और सुव्यवस्थित सामाजिक जीवन के लिए विश्व-विख्यात है।

→ "मोहनजोदड़ो" का अर्थ है – "मृतकों का टीला"।

→ यह नगर अपने समय से बहुत आगे था।

* 2. मोहनजोदड़ो की खोज :

→ मोहनजोदड़ो की खोज 1922 ई. में हुई।

→ इस स्थल के उत्खनन से सिंधु घाटी सभ्यता की उन्नत अवस्था के ठोस प्रमाण सामने आए।

→ खुदाई में मिले पक्के मकान, नालियाँ, स्नानागार और मुहरें यह सिद्ध करती हैं कि यह नगर अपने समय से बहुत आगे था।

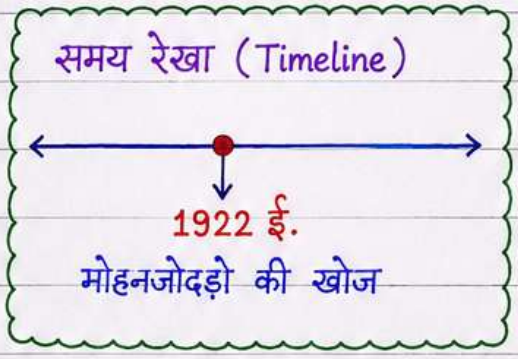

खोज का महत्व :

- सिंधु घाटी सभ्यता की उन्नत अवस्था का प्रमुख प्रमाण।
- नगर नियोजन, जल निकासी, सामाजिक जीवन की उत्कृष्टता का पता चलता है।
- इसने प्राचीन भारतीय इतिहास को नया आयाम दिया।

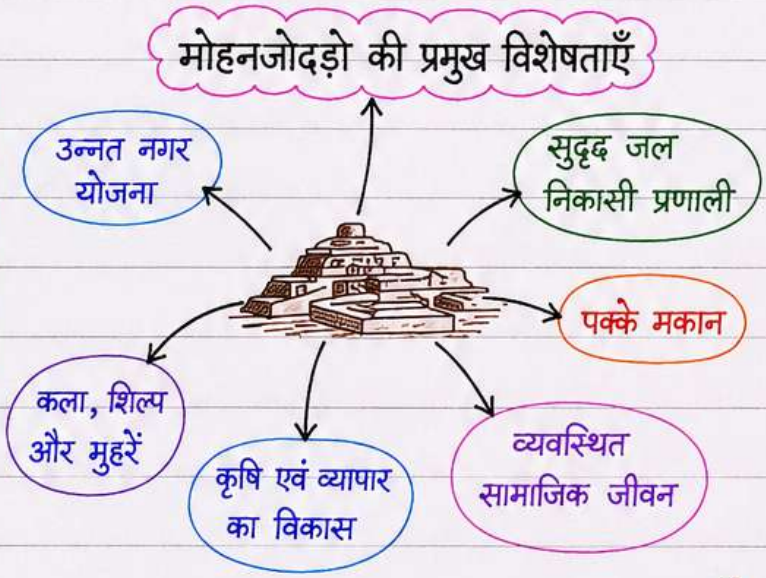

* Remember !

- मोहनजोदड़ो = मृतकों का टीला
- खोज = 1922 ई.
- स्थान = सिंधु नदी के तट पर, सिंध प्रांत, (पाकिस्तान)
- विशेषता = नगर योजना + जल निकासी + पक्के मकान ☺

एक पंक्ति में याद करें !

"मोहनजोदड़ो – प्राचीन भारत की शहरी सभ्यता का सर्वोत्तम उदाहरण है।"

* (अगले पृष्ठ पर जारी...) *

2. भौगोलिक स्थिति एवं नगर नियोजन

* भौगोलिक स्थिति :

- मोहनजोदड़ो वर्तमान पाकिस्तान के सिंध प्रांत में स्थित हैं।
- यह सिंधु नदी के दायें तट पर स्थित था।
- नदी के निकट होने के कारण यहाँ जल, कृषि, परिवहन और व्यापार की सुविधाएँ विकसित थीं।

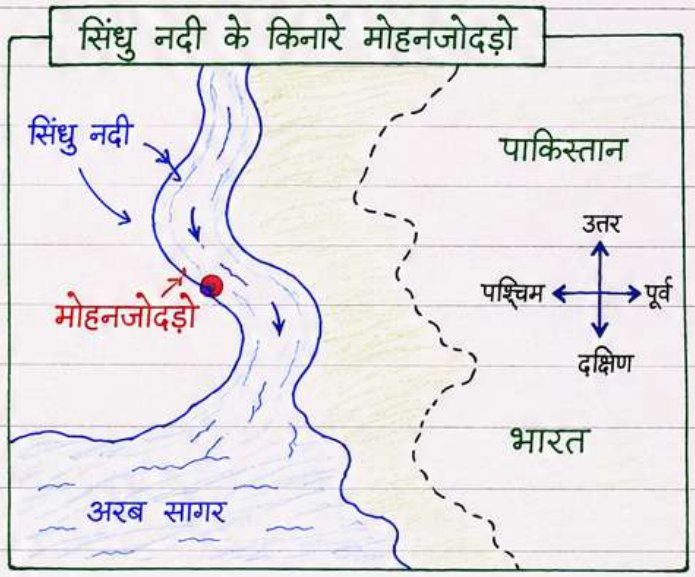

सिंधु नदी का महत्व :

- कृषि के लिए जल उपलब्ध कराती थी।
- व्यापार एवं परिवहन का मुख्य साधन थी।
- नदी मार्ग से अन्य सभ्यताओं से संपर्क था।

* नगर नियोजन (Town Planning) :

- मोहनजोदड़ो की नगर योजना अत्यंत वैज्ञानिक थी।
- यह नगर ग्रिड प्रणाली (Grid System) पर आधारित था।
- सड़कें एक-दूसरे को समकोण (90°) पर काटती थीं।
- यह नगर दो भागों में विभाजित था –
  (i) दुर्ग क्षेत्र (Citadel)
  (ii) निचला नगर (Lower Town)
- संपूर्ण नगर में पकी हुई ईंटों का उपयोग हुआ।
- यह व्यवस्था किसी मजबूत प्रशासनिक नियंत्रण का संकेत देती है।

मोहनजोदड़ो का ग्रिड लेआउट (आकृति)

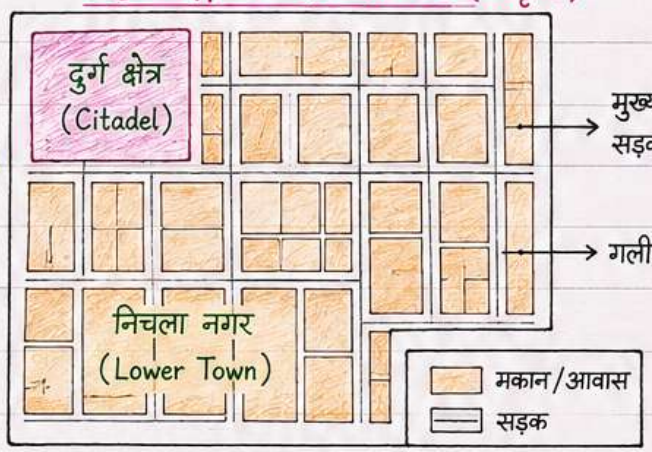

याद रखें !
मोहनजोदड़ो की नगर योजना आज के आधुनिक शहरों की योजना जैसी उन्नत थी।

नगर नियोजन की विशेषताएँ

ग्रिड प्रणाली → समकोण पर सड़कें → दुर्ग क्षेत्र + निचला नगर → पकी ईंटों का प्रयोग → सुदृढ़ प्रशासनिक व्यवस्था

महत्वपूर्ण बिंदु :

- मोहनजोदड़ो = सिंधु घाटी सभ्यता का प्रमुख नगर
- ग्रिड प्रणाली = समकोण पर कटती सड़कें
- पकी ईंटों का उपयोग = योजना और स्थायित्व का प्रमाण
- दुर्ग क्षेत्र = प्रशासनिक + धार्मिक केंद्र
- निचला नगर = आम जनता का आवासीय क्षेत्र

सिंधु नदी के किनारे नगर का दृश्य (कल्पना चित्र)

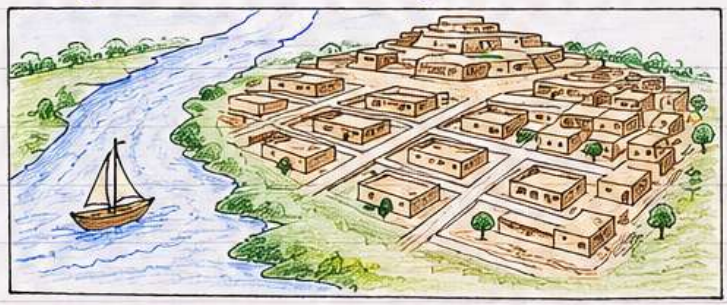

स्मरण मंत्र (Mnemonic) :

"ग्रिड सड़क – समकोण मिले, दुर्ग ऊँचा और नगर खिले।"
(ग्रिड) (समकोण) (दुर्ग क्षेत्र) (निचला नगर)

परीक्षा के लिए संकेत (Exam Tip)

- नगर नियोजन, ग्रिड प्रणाली, दुर्ग एवं निचला नगर – ये प्रश्न अक्सर पूछे जाते हैं।

3. दुर्ग क्षेत्र (Citadel) एवं महान स्नानागार

* (A) दुर्ग क्षेत्र (Citadel) :

→ दुर्ग क्षेत्र नगर का ऊँचा भाग था।
→ यह एक ऊँचे टीले पर बनाया गया था।
→ चारों ओर मोटी एवं मजबूत दीवारें थीं।
→ यहाँ शासकीय तथा प्रशासनिक भवन थे।
→ धार्मिक गतिबिधियाँ भी यहीं संपन्न होती थीं।
→ यह क्षेत्र बाढ़ से सुरक्षित रहने के लिए ऊँचा बनाया गया था।

दुर्ग क्षेत्र का चित्र (ऊँचा भाग)

* (B) महान स्नानागार (Great Bath) :

→ यह मोहनजोदड़ो की सबसे प्रसिद्ध संरचना है।
→ आयताकार आकार का विशाल स्नानागार।
→ चारों ओर कमरे बने हुए थे।
→ पक्की ईटों से निर्मित तथा ईटों के बीच चूने का लेप किया गया था।
→ जल निकासी की अत्यंत उत्तम व्यवस्था थी।
→ इनिहासकारों के अनुसार यह धार्मिक अनुष्ठान और सामूहिक स्नान के लिए प्रयोग होता था।

महान स्नानागार का चित्र

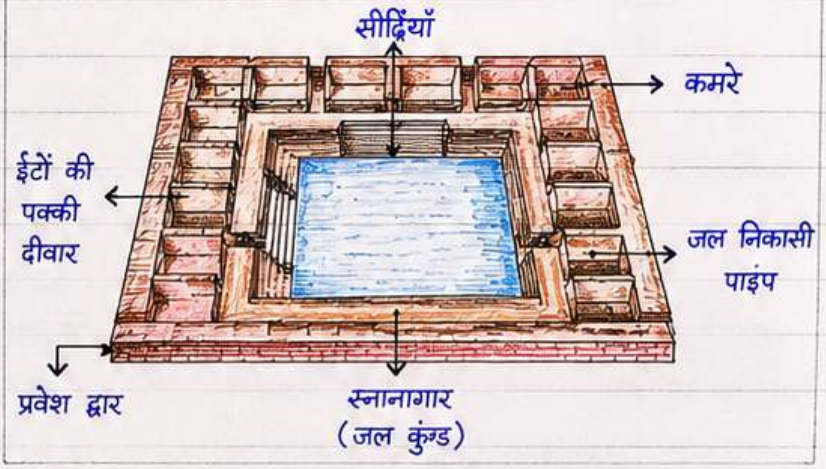

महत्वपूर्ण नोट :
महान स्नानागार की जल निकासी प्रणाली इतनी उत्तम थी कि पानी भरने के बाद भी फर्श पर रिसाव नहीं होता था।

इतिहासकारों की राय :
यह स्नानागार धार्मिक शुद्धि, पवित्रता और विशेष अनुष्ठानों का केंद्र रहा होगा।

दुर्ग क्षेत्र की प्रमुख संरचनाएँ

- ☑ महान स्नानागार
- ☑ अनाज कोषागार (Granary)
- ☑ सभा भवन (Assembly Hall)
- ☑ संभवतः धार्मिक स्थल
- ☑ प्रशासनिक भवन

अनाज कोषागार (Granary) का चित्र

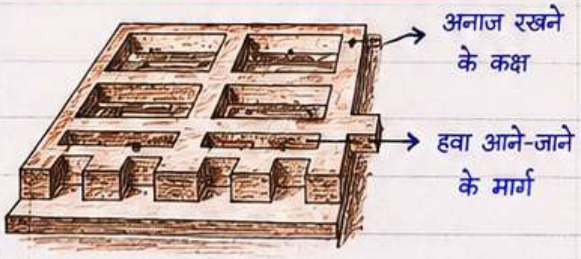

याद रखें !
दुर्ग क्षेत्र यह दर्शाता है कि मोहनजोदड़ो में प्रशासन संगठित और शक्तिशाली था तथा धार्मिक जीवन भी काकी विकसित था।

परीक्षा के लिए मुख्य विंदु :
* दुर्ग क्षेत्र ऊँचे टीले पर स्थित था।
* मोटी दीवारों से घिरा हुआ था।
* महान स्नानागार धार्मिक उपयोग हेतु था।
* यह शासकीय और धार्मिक गतिबिधियों का केंद्र था।

Common Mistake (सामान्य गलती)
महान स्नानागार को केवल आम स्नान के लिए मानना गलत है। यह मुख्यतः धार्मिक अनुष्ठानों के लिए प्रयोग होता था।

* जारी है... *

4. निचला नगर एवं मकानों की बनावट

(A) निचला नगर (Lower Town) :

- दुर्ग क्षेत्र के चारों ओर विस्तृत निचला नगर फैला हुआ था।
- यह आम जनता का आवासीय क्षेत्र था।
- यहाँ की सड़कें सीधी, चौड़ी और समकोण पर कटती थीं।
- नगर योजनाबद्ध एवं सुव्यवस्थित था।
- प्रत्येक घर में स्नानघर तथा शौच की व्यवस्था थी।
- ढकी हुई नालियाँ हर गली में बनी थीं।
- यह क्षेत्र स्वच्छता और अनुशासन का उत्तम उदाहरण है।

निचले नगर की झलक

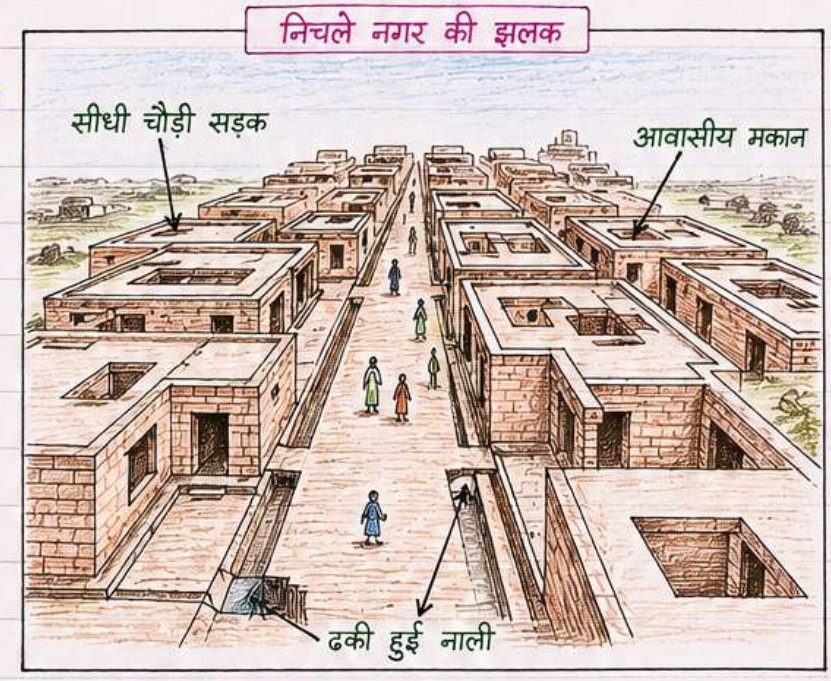

(B) मकानों की बनावट :

- मकान एक या दो मंजिला होते थे।
- पकी हुई ईंटों से बने होते थे।
- आंगन (courtyard) मकान के बीचों-बीच होता था।
- आंगन के चारों ओर कमरे बने होते थे।
- लगभग हर घर में निजी कुआँ होता था।
- खिड़कियाँ प्रायः गलियों की ओर खुलती थीं।
- इससे वायु संचार, गोपनीयता और स्वच्छता बनी रहती थी।

एक सामान्य घर का नक्शा (ऊपर से दृश्य)

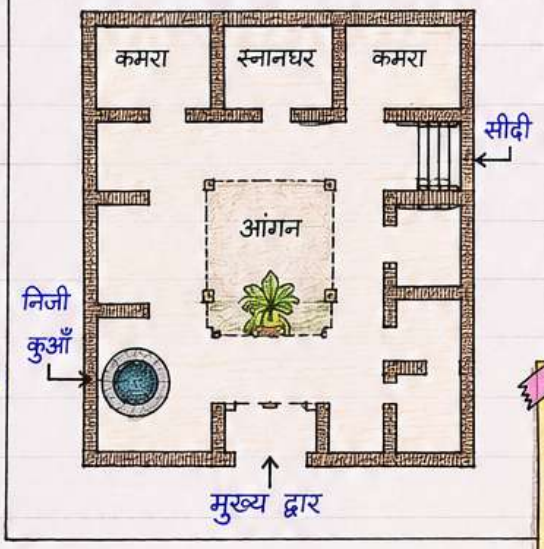

विशेषताएँ

- आंगन युक्त
- निजी कुआँ
- स्नानघर
- वायु संचार
- गोपनीयता

याद रखें !
मोहनजोदड़ो के मकान आज के आधुनिक घरों की तुलना में भी काफी सुविचारित और वैज्ञानिक थे। ☺

तुलना तालिका

प्राचीन मोहनजोदड़ो	आधुनिक नगर
☑ पकी ईंटों के मकान	☑ सीमेंट-कंक्रीट के मकान
☑ आंगन युक्त घर	☑ आंगन कम या नहीं
☑ निजी कुआँ	☑ सार्वजनिक जल आपूर्ति
☑ स्नानघर	☑ आधुनिक बाथरूम
☑ ढकी हुई नालियाँ	☑ सीवर प्रणाली
☑ गोपनीयता और स्वच्छता	☑ योजना पर आधारित नगर

मकान की विशेषताएँ (संक्षेप में)

महत्वपूर्ण तथ्य :

- मोहनजोदड़ो के मकान निजी जीवन की सुरक्षा को दर्शाते हैं।
- घरों में वैज्ञानिक सुविधाएँ उस समय के उन्नत समाज को बताती हैं।
- स्वच्छता और जल निकासी की व्यवस्था अद्भुत थी।

परीक्षा के लिए संकेत (Exam Tip)

- मकानों की बनावट, विशेषताएँ और उनकी उपयोगिता लिखना परीक्षा में महत्वपूर्ण होता है।

* आगे देखें – जल निकासी प्रणाली *

5. जल निकासी प्रणाली (Drainage System)

✳ जल निकासी प्रणाली का महत्व :

→ मोहनजोदड़ो की जल निकासी प्रणाली अपने समय की सर्वश्रेष्ठ प्रणालियों में से एक थी।

→ यह दर्शाती है कि नगर की योजना वैज्ञानिक और संगठित थी।

→ स्वच्छता और स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दिया गया था।

ढकी हुई नाली की संरचना (Cross-section)

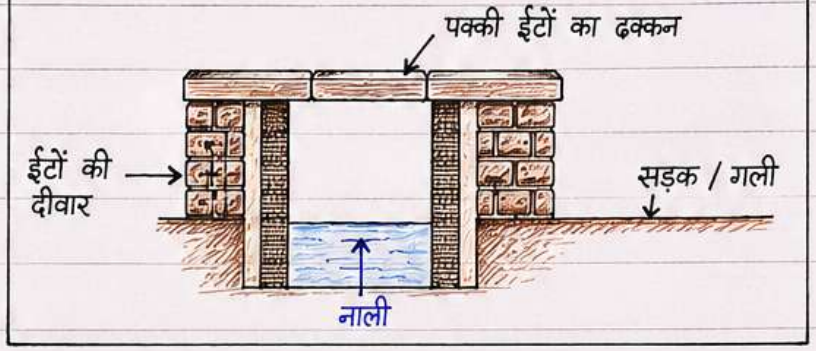

✳ जल निकासी की विशेषताएँ :

- ढकी हुई नालियाँ बनाई गई थीं।
- हर घर से नाली जुड़ी हुई थी।
- नालियों की नियमित सफाई की व्यवस्था थी।
- गंदे पानी को नगर से बाहर निकाला जाता था।
- नालियाँ पक्की ईंटों से बनी थीं।
- बड़े मुख्य नाले शहर के बाहर खुलते थे।

जल निकासी की कार्य-प्रणाली (Flow Diagram)

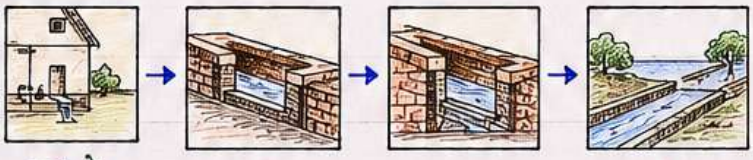

घर के स्नानघर / रसोई से नाली जुड़ी → छोटी ढकी नाली → मुख्य नाली → नगर से बाहर बड़े जलाशय / खेतों की ओर

आधुनिक शहरों से तुलना

मोहनजोदड़ो की व्यवस्था	आधुनिक शहरों की स्थिति
✓ ढकी हुई नालियाँ	✗ कई जगह नालियाँ खुली
✓ हर घर से नाली जुड़ी	✗ सभी घरों से नाली जुड़ी नहीं
✓ नियमित सफाई की व्यवस्था	✗ सफाई अनियमित
✓ गंदे पानी का निकास बाहर	✗ जल निकास में रुकावट
✓ स्वच्छता पर विशेष ध्यान	✗ प्रदूषण और बीमारियाँ

याद रखें !

मोहनजोदड़ो के लोग स्वच्छता के प्रति बहुत जागरूक थे और उनकी जल निकासी प्रणाली आज भी इंजीनियरिंग का अद्भुत उदाहरण मानी जाती है। ☺

जल निकासी प्रणाली का नक्शा (Plan)

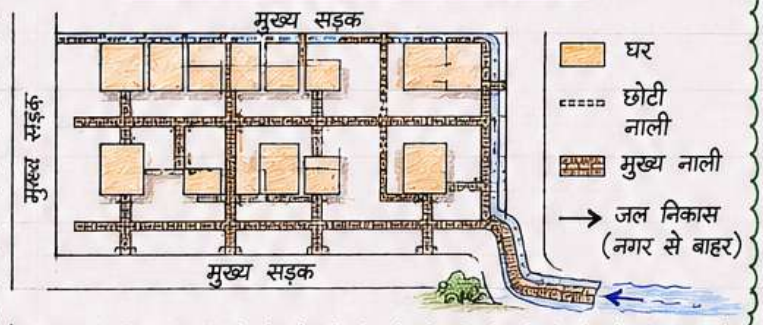

परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण बिंदु :

✳ मोहनजोदड़ो की जल निकासी प्रणाली उन्नत और वैज्ञानिक थी।

✳ ढकी नालियाँ और नियमित सफाई इसकी विशेषता थी।

✳ गंदे पानी का निकास नगर से बाहर किया जाता था।

✳ यह व्यवस्था स्वच्छ और स्वस्थ जीवन की गारंटी देती थी।

महत्वपूर्ण तथ्य :

- इतिहासकारों के अनुसार, मोहनजोदड़ो की जल निकासी प्रणाली विश्व की प्राचीनतम और सबसे उन्नत प्रणालियों में से एक थी।

परीक्षा मंत्र (Mmemonic) :

" ढक्की नाली – घरों से जुड़ी, सफाई से सुधरी,
नगर से बाहर – स्वच्छता में अग्रणी। "

✳ स्वच्छता ही संस्कृति है। ✳

6. आर्थिक एवं सामाजिक जीवन

* (A) आर्थिक जीवन (Economic Life) :

1. कृषि (Agriculture) :

- मोहनजोदड़ो की अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर आधारित थी।
- यहां गेहूँ, जौ, कपास, तिल, मटर आदि की खेती होती थी।

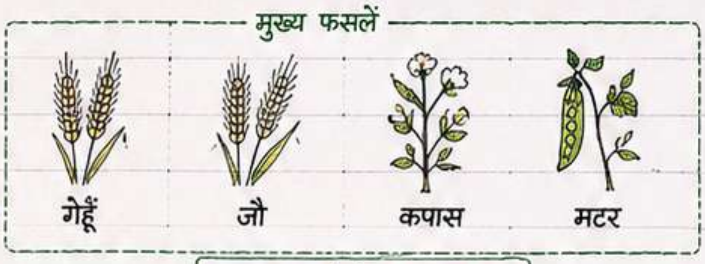

2. व्यापार (Trade) :

- यहां आंतरिक तथा विदेशी व्यापार विकसित था।
- मोहनजोदड़ो के लोग मैसोपोटामिया (सुमेर) तक व्यापार करते थे।
- → समुद्री तथा स्थल मार्ग दोनों का उपयोग किया जाता था।

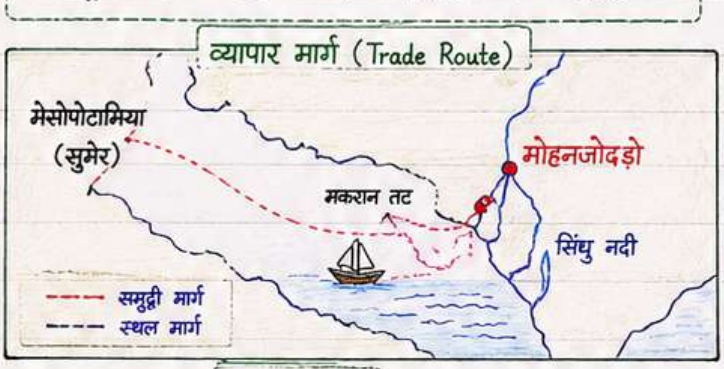

3. हस्तशिल्प एवं उद्योग :

- मनका निर्माण, धातु कर्म, मिट्टी के बर्तन, मुहर निर्माण, बुनाई, लकड़ी के सामान आदि उद्योग थे।
- कार्नेलियन, फिरोज़ा, लैपिस लाजुली आदि पत्थरों के मनके बनते थे।

4. मुहरों का प्रयोग :

- → मोहनजोदड़ो में मुहरों का प्रयोग व्यापार और पहचान के लिए होता था।
- → इन पर जानवरों की आकृतियां तथा लिपि अंकित होती थीं।

* (B) सामाजिक जीवन (Social Life) :

- → मोहनजोदड़ो का समाज शांतिप्रिय और संगठित था।
- → वर्गभेद के कम प्रमाण मिलते हैं।
- → स्त्री-पुरुष दोनों की भूमिका महत्वपूर्ण थी।
- → महिलाओं के आभूषण और मूर्तियां उनके सम्मान को दर्शाती हैं।
- → अनुशासित जीवन शैली और स्वच्छता का ध्यान।
- → यहां किसी भव्य राजमहल या विशाल सैन्य संरचना का अभाव है, जो शांत समाज का संकेत देता हैं।

तुलना तालिका

बिंदु	मोहनजोदड़ो	आधुनिक नगर
नगर योजना	ग्रिड प्रणाली	ग्रिड प्रणाली
सड़कें	चौड़ी और सीधी	चौड़ी और सीधी
जल निकासी	ढकी हुई नालियां	ढकी हुई नालियां
स्वच्छता	उच्च स्तर	अधिकांश शुहरों में कमी
जल आपूर्ति	कुएँ और नालियां	पाइपलाइन प्रणाली
भवन निर्माण	पकी ईंटों से	कंक्रीट, ईंट, स्टील

याद रखें !

मोहनजोदड़ो की अर्थव्यवस्था कृषि और व्यापार पर आधारित थी, जबकि इसका समाज शांतिप्रिय, संगठित और स्वच्छता-प्रिय था।

परीक्षा के लिए महत्वपूर्ण बिंदु :

- * कृषि – गेहूँ, जौ, कपास
- * व्यापार मेसोपोटामिया तक
- * हस्तशिल्प – मनका, बर्तन, मुहर
- * वर्गभेद के कम प्रमाण
- * स्त्री-पुरुष दोनों की भूमिका
- * स्वच्छता और अनुशासन

Mnemonic (स्मृति सूत्र) :

"कृ-व्यापार-मनका-संगठित-स्वच्छ"

↓

कृषि, व्यापार, मनका निर्माण, संगठित समाज और स्वच्छता मोहनजोदड़ो की पहचान।

* आर्थिक समृद्धि और सामाजिक सामंजस्य – मोहनजोदड़ो की पहचान थी। *

7. धार्मिक जीवन एवं कला-शिल्प

* (A) धार्मिक जीवन (Religious Life):

- मोहनजोदड़ो में लोगों की धार्मिक मान्यताएँ प्रकृति और पवित्रता पर आधारित थीं।
- धार्मिक सहिष्णुता और विविधता के प्रमाण मिलते हैं।

प्रमुख धार्मिक मान्यताएँ :

1. **मातृदेवी की पूजा –**
   स्त्री शक्ति की उपासना के प्रमाण मिलते हैं। मिट्टी की मातृदेवी मूर्तियाँ प्राप्त हुई हैं।
2. **पशुपति (आदि शिव) की आराधना –**
   प्रसिद्ध "पशुपति मुहर' शिव के आराधन का प्रमाण हैं।
3. **जल और स्नान की पवित्रता –**
   महान स्नानागार धार्मिक अनुष्ठानों और शुद्धि के लिए प्रयुक्त होता था।
4. **पशु पूजा –**
   बैल, हाथी, गैंडा, बाघ आदि पशुओं का आदर किया जाता था।
5. **वृक्ष पूजा –**
   पीपल जैसे वृक्षों की पूजा के प्रमाण मिलते हैं।

धार्मिक प्रमाण (चित्र सहित)

मातृदेवी की मूर्ति	पशुपति मुहर	वृक्ष पूजा (पीपल)
बैल की मूर्ति	**जल की पवित्रता**	**पशु पूजा**
		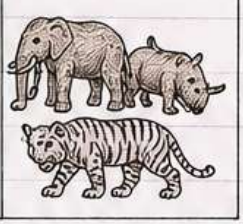

महत्वपूर्ण तथ्य :
महान स्नानागार, जल की पवित्रता और धार्मिक अनुष्ठानो के महत्व को स्पष्ट करता हैं। यह सामूहिक धार्मिक जीवन का केंद्र रहा होगा।

* (B) कला एवं शिल्प (Art & Craft):

- मोहनजोदड़ो कला और शिल्प का भी एक प्रमुख केंद्र था।
- यहाँ के लोग तकनीकी रुप से अत्यंत दक्ष थे।

मुख्य कलाकृतियाँ :

कांस्य की नर्तकी	पत्थर की मूर्तियाँ	मिट्टी के खिलौने	मनके	आभूषण
		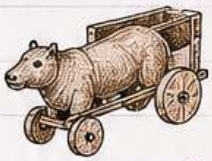		
ब्रॉन्ज की नसिद्ध नर्तकी बहुत ही सुंदर कलाकृति हैं।	दाढ़ी वाले पुरुष की मूर्ति प्रसिद्ध हैं।	पशु-पक्षी तथा गाड़ियों के खिलौने मिलते हैं।	अर्द्धमूल्यवान पत्थरों के मनके विविध आकारों के।	सोना, चांदी, तांबा तथा कीमती पत्थरों से बने।

कला एवं शिल्प की विशेषताएँ :

- ☑ उच्च कोटि की वास्तुकला और निर्माण कला
- ☑ धातु विज्ञान का ज्ञान
- ☑ मिट्टी के बर्तन एवं खिलौनों की सुंदर डिजाइन
- ☑ मनका-निर्माण की उन्नत तकनीक
- ☑ सौंदर्य-बोध और शिल्पकला की उत्कृष्टता

याद रखने की Trick

"नर्तकी पत्थर में नाचे,
खिलौने बैलगाड़ी लाए,
मनके और आभूषण बोलें,
मोहनजोदड़ो कला दिखाए।"
(नर्तकी – पत्थर – खिलौना – मनके – आभूषण)

परीक्षा के लिए संकेत

धार्मिक मान्यताएँ + कला-शिल्प = मोहनजोदड़ो की सांस्कृतिक समृद्धि का परिचय देती हैं। दोनों अक्सर परीक्षा में पूछे जाते हैं।

Common Mistake (सामान्य गलती)

महान स्नानागार को केवल नहाने के लिए मानना गलती हैं। यह धार्मिक अनुष्ठानों और सामूहिक शुद्धि के लिए भी प्रयुक्त होता था।

Exam Tip (परीक्षा टिप)

धार्मिक मान्यताओं और कलाकृतियों के नाम चित्र सहित याद करें। चित्र बनाना उत्तर को और प्रभावी बनाता हैं।

* धर्म, कला और शिल्प – मोहनजोदड़ों की संस्कृति की पहचान थे। *

8. मोहनजोदड़ो का पतन, पुनरावलोकन एवं महत्वपूर्ण तथ्य

(A) मोहनजोदड़ो का पतन (Decline) :

मोहनजोदड़ो के पतन के सटीक कारण ज्ञात नहीं हैं, परंतु इतिहासकारों ने निम्न संभावित कारण बताए हैं –

पतन के संभावित कारण

1. बार-बार आने वाली बाढ़	2. जलवायु परिवर्तन	3. सिंधु नदी का मार्ग बदलना	4. प्राकृतिक आपदाएँ	5. धीरे-धीरे आर्थिक गिरावट
	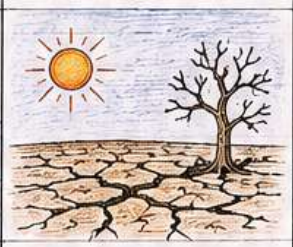	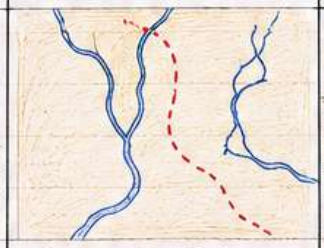		
सिंधु नदी में बार-बार बाढ़ आने से नगर को भारी क्षति पहुँची।	जलवायु में परिवर्तन के कारण सूखा पड़ा और संसाधन कम हुए।	नदी का मार्ग बदलने से जल आपूर्ति और खेती प्रभावित हुई।	भूकंप या अन्य प्राकृतिक आपदाओं ने नगर को नुकसान पहुँचाया।	व्यापार और उद्योग में कमी से आर्थिक स्थिति कमजोर हुई।

➔ इन कारणों से नगर की समृद्धि धीरे-धीरे कम हुई और अंततः मोहनजोदड़ो उजड़ गया।

(B) पुनरावलोकन (Revision) – एक नज़र में :

मोहनजोदड़ो (सिंधु घाटी सभ्यता का प्रमुख नगर)

खोज
- 1922 ई. में खोज
- सिंधु घाटी सभ्यता के उन्नत अवस्था के प्रमाण

स्थान
- वर्तमान पाकिस्तान के सिंध प्रांत में
- सिंधु नदी के तट पर

नगर नियोजन
- ग्रिड प्रणाली पर आधारित
- समकोण पर कटती सड़कें
- दुर्ग क्षेत्र और निचला नगर
- पक्की ईंटों का प्रयोग

दुर्ग क्षेत्र
- ऊँचे टीले पर निर्मित
- मोटी दीवारों से घिरा
- प्रशासनिक व धार्मिक भवन
- महान स्नानागार की उपस्थिति

निचला नगर
- आम जन का आवासीय क्षेत्र
- चौड़ी सड़कें, ढकी नालियों
- घरों में स्नानघर की व्यवस्था
- सुव्यवस्थित जनजीवन

मकानों की बनावट
- एक या दो मंज़िला मकान
- आंगन युक्त, निजी कुएँ
- खिड़कियाँ गलियों की ओर
- गोपनीयता, वायु संचार, स्वच्छता

जल निकासी प्रणाली
- ढकी हुई नालियाँ
- हर घर से जुड़ी नालियाँ
- सफाई की नियमित व्यवस्था
- गंदे पानी का नगर से बाहर निकास

आर्थिक जीवन
- कृषि: गेहूँ, जौ, कपास
- हस्तशिल्प, मनका निर्माण
- आंतरिक व विदेशी व्यापार
- मुहरों का प्रयोग

सामाजिक जीवन
- वर्गभेद के कम प्रमाण
- स्त्री-पुरुष दोनों की भूमिका
- अनुशासित, शांतिप्रिय समाज

धार्मिक जीवन
- मातृदेवी की पूजा
- पशुपति (आदि शिव) की आराधना
- जल, पशु, वृक्ष की पूजा
- महान स्नानागार का धार्मिक महत्व

कला एवं शिल्प
- कांस्य की नर्तकी, मूर्तियाँ
- मिट्टी के खिलौने, आभूषण
- मनके, मुहरें, धातु के उपकरण
- सौंदर्य-बोध और तकनीकी दक्षता

महत्वपूर्ण तथ्य (Important Facts)

- मोहनजोदड़ो का अर्थ – मृतकों का टीला।
- यह सिंधु घाटी सभ्यता का सबसे प्रसिद्ध नगर था।
- इसकी नगर योजना अपने समय से बहुत आगे थी।
- जल निकासी प्रणाली विश्व की सर्वश्रेष्ठ प्राचीन प्रणालियों में से एक थी।
- महान स्नानागार धार्मिक अनुष्ठानों के लिए प्रयोग होता था।

परीक्षा के लिए संभावित प्रश्न (Possible Questions)

1. मोहनजोदड़ो की खोज कब हुई?
2. मोहनजोदड़ो की नगर योजना की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
3. महान स्नानागार का वर्णन कीजिए।
4. मोहनजोदड़ो की जल निकासी प्रणाली की विशेषताएँ लिखिए।
5. मोहनजोदड़ो के आर्थिक जीवन का वर्णन कीजिए।
6. मोहनजोदड़ो के पतन के संभावित कारण लिखिए।

याद रखें : मोहनजोदड़ो प्राचीन भारत की उन्नत सभ्यता, योजना, स्वच्छता और संस्कृति का अद्भुत उदाहरण हैं। यह हमारे गौरवशाली इतिहास की अनुपम धरोहर हैं।